लॉक की ज्ञानमीमांसा = टिप्पणी

लॉक, आधुनिक काल में पाश्चात्य दर्शन की अनुभववादी धारा का पहला दार्शनिक है जिसमें तत्वमीमांसा के स्थान पर ज्ञानमीमांसा को दर्शन के केन्द्र में स्थापित किया। उसने जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धांत का खण्डन किया और बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा की नींव को हिला दिया। इसके अतिरिक्त उसने ज्ञान की प्रक्रिया का अनुभववादी दृष्टिकोण से विस्तृत विवेचन भी किया।

लॉक के अनुसार आत्मा ज्ञान का अधिष्ठान है किंतु ज्ञान की निर्माणक सामग्री सवेदन या स्वसंवेदन के माध्यम से आती है। सवेदन और स्वसंवेदन के प्रत्यय ही ज्ञान का निर्माण करते हैं। आत्मा निष्क्रिय अवस्था में सरल प्रत्ययों को स्वीकार करती है जबकि सक्रिय अवस्था में तीन प्रकार के मिश्र प्रत्यय हैं- पर्याय, सम्बन्ध तथा द्रव्य का निर्माण करती है।

लॉक ने ज्ञान के तीन प्रकार माने हैं- प्रातिभ ज्ञान, निदर्शनात्मक ज्ञान तथा संवेदनात्मक ज्ञान। प्रातिभ ज्ञान दो प्रत्ययों के सम्बन्ध का साक्षात् ज्ञान है, जो आनुभविक अन्तर्दृष्टि से उत्पन्न होता है। निदर्शनात्मक ज्ञान, बौद्धिक ज्ञान है जो अन्ततः प्रातिभ ज्ञान पर ही आधारित है। संवेदनात्मक ज्ञान सामान्य आनुभविक ज्ञान है जो अनिश्चयात्मकता के कारण निम्नतम कोटि का है।

लॉक ने ज्ञान के स्वरूप तथा प्रमाणिकता पर भी विचार किया है। उसका मत है कि ज्ञान का अर्थ प्रत्ययों के सम्बन्धों, उनकी संगति, असंगति व प्रतिकूलता का प्रत्यक्ष है। ज्ञान की वैधता या प्रमाणिकता के सम्बन्ध में उसने तीन कोटियों- सत्य-असत्य, सत्-असत्, पर्याप्त-अपर्याप्त का वर्णन किया है।

लॉक की ज्ञानमीमांसा अनुभववाद से विचलित हो गई जब उसने मूल गुण तथा उप गुण में अंतर माना तथा द्रव्य की सत्ता को स्वीकार किया। इस दोष के बावजूद उसका महत्व यह

अवश्य है कि उसी की मान्यताओं पर आगे चलकर अनुभववाद का पूर्ण विकास हुआ।